thearyasamaj.org

ओ३म्

31st October 2014

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

दयानन्द विशेषांक

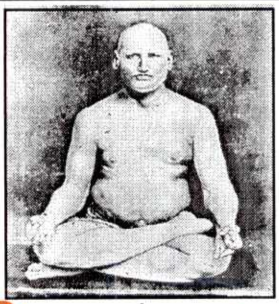

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. तेलंगाना
महर्षि दयानन्द मार्ग सुल्तान बज़ार, हैदराबाद के

तत्वावधान में

आर्य समाज क्या है?

पुस्तक का

विमोचन समारोह

सादर निमंत्रण

०८ नवम्बर,२०१४ शनिवार सायं ४-३०बजे से
स्थान : पं. नरेन्द्र भवन राजमोहल्ला,
नारायणगूडा, हैदराबाद

आर्य समाज के 10 नियमों पर महर्षि दयानन्द की मान्यताओं व सिद्धान्ता पर महात्मा नारायण स्वामी द्वारा लिखित व श्री अनन्तार्य जी द्वारा तेलुगु में अनुवदित

सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तक का विमोचन समारोह ०८ नवम्बर,२०१४ शनिवार सायं ४-३०बजे से बजे होगा। आप सभी सादर निमंत्रित है।

मुख्य अतिथि	:	मान्य श्री अल्लम नारायण जी
गौरव अतिथि	:	मान्य श्री वेदकुमार जी
	:	मान्य श्री डॉ. टी.वी. नारायण जी उप प्रधान सभा
अध्यक्षता	:	मान्य श्री विट्ठल राव जी आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा

निवेदक

हरिकिशन वेदालंकार - मंत्री लक्ष्मण सिंह -उप प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. तेलंगाना, हैदराबाद

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. -తెలంగాణ
మహర్షి దయానంద మార్గం
సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాద్
ఆధ్వర్యంలో

ఆర్యసమాజమనగానేమి?

పుస్తక విమోచన సమావేశమునకు

సాదర ఆహ్వానం

తేది : 08 నవంబర్, 2014 శనివారం
సాయం: 4.30 గం॥లకు
స్థలం : పం. నరేంద్ర భవన్ రాజమోహల్ల,
నారాయణగూడ, హైదరాబాద్

ఆర్య సమాజ నియమములు, స్థూలరూప సిద్ధాంతముల యొక్క పాత్ర పై హిందీలో **మహాత్మ నారాయణ స్వామి విరచిత** " ఆర్యసమాజ్ క్యా హై" పుస్తకమును శ్రీ ఆనంతార్య గారి ద్వారా తెలుగులో అనువదించిన, ఆర్య ప్రతినిధి సభ వారు ప్రచురించిన పుస్తక ఆవిష్కరణ సమావేశమునకు అందరిని సాదరముగా ఆహ్వానిస్తున్నాము.

08 నవంబర్ 2014 శనివారం
సాయంత్రం: 4.30 గం॥లకు జరుగును

ముఖ్య అతిథి	: మాన్యశ్రీ అల్లం నారాయణ గారు
గౌరవ అతిథులు	: మాన్యశ్రీ వేదకుమాం గారు
	:మాన్యశ్రీ డా॥ టి.వి. నారాయణ గారు ఉప ప్రధాన సభ
అధ్యక్షత	:మాన్యశ్రీ విఠ్ఠల్‌రావు ఆర్య గారు ప్రధాన్ ఆర్య ప్రతినిథిసభ

నివేదకులు

హరికిషన్ వేదాలంకాం మంత్రి లక్ష్మణ్ సింహ ఉప ప్రధాన్
ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ,హైదరాబాద

thearyasamaj.org

'ईश्वर के सच्चे अद्वितीय पुत्र और सन्देशवाहक वेदज्ञ और धर्मज्ञ महर्षि दयानन्द और हमारा संसार

ईश्वर ने यह सारा संसार जीवों के कल्याण के लिए और पूर्व जन्मों में उनके द्वारा किये गये शुभ व अशुभ कर्मों के फल प्रदान करने के लिए बनाया है। सभी मनुष्य अपना जीवन सत्य ज्ञान, कर्म व उपासना के द्वारा व्यतीत करते हुए धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त कर सकें, इसके लिए उस दयालु परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा नाम के चार ऋषियों के द्वारा अपना सत्य, कल्याणकारी व मनुष्य का परम हितकारी ज्ञान "वेद" दिया और उसे हम तक पहुंचाया है। इस ज्ञान को प्राप्त कर सृष्टि के आरम्भ से महाभारत काल तक व उसके बाद भी कुछ मनुष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त करते रहे हैं। महाभारत काल के बाद वेदों का ज्ञान विलुप्त हो गया जिससे सर्वत्र अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियां, अनुचित कर्म काण्ड, यज्ञों में पशु हिंसा, स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन से वंचित किया जाना, छुआछुत, जन्माधारित जाति प्रथा, आलस्य व प्रमाद आदि हानिकर मान्यतायें समाज में प्रविष्ट हो गईं। मानव जीवन का इतना अधिक पतन हुआ कि इसका वर्णन करना कठिन है। अज्ञान के कारण हमारे देश में व विदेशों में भी अनेकानेक मत–मतान्तर व पन्थ–सम्प्रदाय उत्पन्न हो गये जो स्वयं को ही सच्चा धर्म मानने लगे। उन्होंने अपने मत में निहित असत्य व अज्ञान पर विचार करना ही छोड़ दिया। आज भी यही स्थिति दिखाई देती है। इसके विपरीत यह भी देखा जा रहा है कि आज के मत–मतान्तरारों में अपने असत्य, अज्ञान व अन्धविश्वासों छुपाने व उनका पोषण करने की प्रवृत्ति है और इसके लिए कुछ लोग सच्चे मानवों का खून बहाने के लिए भी तत्पर हैं। यह सिलसिला आज के वैज्ञानिक युग में भी बदस्तूर जारी है।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म एक ब्राह्मण कुल में 12 फरवरी, 1825 को गुजरात के राजकोट जनपद के टंकारा नामक कस्बे में श्री करसनजी तिवारी के यहां हुआ। 14 वर्ष की आयु में पिता की प्रेरणा से उन्होंने शिवरात्रि का व्रतोपवास किया। रात्रि एक मन्दिर में जागरण करते हुए शिव की मूर्ति अर्थात् शिवलिंग पर चूहों की उछल–कूद देखकर उन्हें मूर्ति के साक्षात ईश्वर व ईश्वरीय शक्ति सम्पन्न होने में सन्देह हुआ। पिता अपने किशोर पुत्र की शंकाओं का समाधान नहीं कर सके। कालान्तर में उनकी एक बहिन और चाचा की मृत्यु हो गई। अब इन दो मौतों ने बालक व युवक मूलशंकर (स्वामी दयानन्द जी का बचपन का नाम) में वैराग्य की भावना को उत्पन्न कर दिया। वह सच्चे ईश्वर व मृत्यु से बचने के उपायों की खोज के लिए घर से भाग निकले और उस समय के साधु–सन्तों–योगियों–ज्ञानियों–धर्माचार्यों की संगति कर उनसे इनके उपाय पूछने लगे। अध्ययन में बाधा आने के कारण उन्होंने संन्यास लेकर स्वामी दयानन्द नाम पाया। उनकी खोज नवम्बर, सन् 1860 में मथुरा के दण्डी गुरू स्वामी विरजानन्द सरस्वती की कुटिया में अध्ययनार्थ पहुंचने तक जारी थी। इस बीच उन्होंने देश का भ्रमण किया और उन्हें जो भी विद्वान, साधु, सन्त, ज्ञानी, यति, योगी, धर्म प्रचारक, महन्त आदि मिले, उनसे उपदेश व शंका–समाधान के साथ योग विद्या का अध्ययन व अभ्यास करते रहे। वह योग व ईश्वर की प्राप्ति में सफल भी हो गये थे परन्तु विद्याव्यसनी होने के कारण वह और अधिक ज्ञान प्राप्ति के इच्छुक थे जिसने उन्हें मथुरा पहुंचा दिया। गुरू विरजानन्द जी के यहां लगभग 3 वर्ष रहकर उन्होंने व्याकरण एवं वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन समाप्त किया और गुरू की आज्ञा से वेद वा धर्म प्रचार के क्षेत्र में पदार्पण किया। **यह अदभुत संयोग है कि एक गुजराती जिज्ञासु दक्षिण भारतीय संन्यासी स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से सन्यास लेता है और पंजाब के विद्वान गुरू दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती से वेद व आर्ष ज्ञान से परिपूर्ण होता है। देश भर में प्रचार करता है और राजस्थान में अपनी जीवन लीला समाप्त करता है और जगदगुरू के आसन पर विराजमान होता है। सारे विश्व के करोड़ों लोग उसके आज अनुयायी हैं। हम अनुभव करते हैं कि उनके समान विश्व का उपकार व कल्याण करने वाला अन्य कोई महापुरूष नहीं हुआ।**

स्वामी दयानन्द ने देशी व विदेशी सभी मत–पन्थों के ग्रन्थों का अध्ययन किया और पाया कि सभी मतों में असत्य, अज्ञान, कुरीतियां, अन्धविश्वास, पाखण्ड, एक–दूसरे मत का विरोध आदि स्वभाव व व्यवहार विद्यमान है और इसके साथ सभी मत अपने अनुयायियों को उनके जीवन का सत्य व यथार्थ उद्देश्य व लक्ष्य व उसकी प्राप्ति के साधन बताने में असमर्थ हैं। उन्होंने सबसे पहले मूर्तिपूजा को लिया और इस पर धर्म और विद्या की नगरी काशी के 30 से अधिक शीर्षस्थ विद्वान पण्डितों से शास्त्रार्थ किया। मूर्ति पूजा वेदों से, युक्ति और प्रमाणों से सिद्ध न की जा सकी और आज तक भी नहीं की जा सकी है। इससे महर्षि दयानन्द देश और देशान्तर में भी प्रसिद्ध हो गये। अब उनका सारा

thearyasamaj.org

समय उपदेश, प्रवचन, व्याख्यान, वार्तालाप, शंका समाधान, भेंट–वार्ता, शास्त्रार्थ व ग्रन्थ लेखन के साथ देश भर व राजे–रजवाड़ों में घूम–घूम कर प्रचार व जन–सम्पर्क में व्यतीत होने लगा। **उन्होंने सत्य धर्म व मत के निर्णयार्थ सत्यार्थ प्रकाश जैसा कालजयी ग्रन्थ लिखा जिसकी तुलना में संसार में कोई दूसरा ग्रन्थ आज तक भी नहीं लिखा गया है।** इसके अतिरिक्त उन्होंने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, ऋग्वेद व यजुर्वेद का भाष्य, संस्कार विधि, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु, गोकरूणानिधि आदि अनेक बहुमूल्य ग्रन्थ लिखें। उन्होंने तर्क, प्रमाणों, युक्तियों, विवेचना, समीक्षाओं, उद्धरणों से सभी मतों व उनके धर्म ग्रन्थों की समीक्षा कर पाया कि पूर्ण सत्य केवल और केवल वेदों में ही विद्यमान है। **यह वेद ईश्वर प्रणीत ग्रन्थ हैं जिनका सृष्टि की आदि में ईश्वर द्वारा प्रकाश किया गया था।** उन्होंने वेदों को स्वतः प्रमाण पाया और सबको बताया तथा अन्य सभी ग्रन्थों को परतः प्रमाण बताया यदि वह वेदानुकूल हों। इस प्रकार से संसार को सत्य धर्म का ज्ञान हुआ और वह "सत्य–धर्म का ज्ञान" सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों सहित वेद व वेदानुकूल ग्रन्थ मनुस्मृति, 11 उपनिषद, 6 दर्शन आदि के रूप में आज भी हमें प्राप्त है। **महर्षि दयानन्द ने यह कार्य करके ईश्वर का सच्चा, महान, अद्वितीय, युगपुरूष होने के साथ ईश्वर का सच्चा सन्देशवाहक होने का प्रमाण दिया।** हमारे अध्ययन के अनुसार महाभारत काल के बाद सारी दुनियां में उनके समान कोई वेदज्ञ, धर्मज्ञ, योगी, समाज सुधारक व सामाजिक नेता, राजधर्म वेत्ता, ज्ञान–विज्ञानविद् महापुरूष दूसरा कहीं कोई नहीं हुआ है। महर्षि दयानन्द का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वह सर्वगुण सम्पन्न अद्वितीय पूर्ण पुरूष थे। यद्यपि आज भी उन जैसे महापुरूषों की देश व विश्व को आवश्यकता है परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि वह **भूतो न भविष्यति**" की उपमा वाले अपनी तरह के एक ही पुरूष संसार के इतिहास में हुए हैं।

आज संसार में अनेक मत–मतान्तर हैं। सबकी मान्यतायें कुछ समान व कुछ असमान व परस्पर विरूद्ध भी हैं। हमें सभी मतों में एक कमी दर्षष्टिगोचर होती है कि सभी मतानुयायी अपनी–अपनी धर्म पुस्तकों को ही पढ़ते हैं, अन्य मतों व धर्मों की पुस्तकों को नहीं पढ़ते। हमारा मानना है कि सभी मनुष्यों को सभी मतों की पुस्तकों को निष्पक्ष भाव से पढ़ना चाहिये और सत्य जहां भी है, उसको स्वीकार करना चाहिये। इसके साथ उन्हें प्रेम पूर्वक सत्य धर्म का प्रचार भी सर्वत्र करना चाहिये और सदेच्छापूर्वक प्रचार करने वाले सच्चे धर्म प्रचारकों को सहयोग देना चाहिये। **आज का युग विज्ञान का युग है जिसमें हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिये। यदि कोई ऐसा करता है तो वह अपने धर्म की दुर्बलता को प्रकट करता है।** किसी भी मत के अनुयायी की हठधर्मिता, स्वभाव व व्यवहार में कठोरता, हिंसात्मक प्रवषत्ति, असहयोगात्मक व्यवहार व प्रवषत्ति, रूढ़िवादी विचार व अन्य मतों का पूर्वाग्रह से मुक्त होकर अध्ययन न करना उसके मत की दुर्बलता को प्रकट करता है। **सभी मतों का अध्ययन करने पर यह सिद्ध होता है कि इस पूरे ब्रह्माण्ड में केवल एक ही ईश्वर है। उस ईश्वर को अपने कार्यों से प्रसन्न करना ही मनुष्य का धर्म है।** वह कैसे प्रसन्न होता है? इसका उत्तर है कि वह सच्ची ईश्वरोपासना, यज्ञ–अग्निहोत्र, पितष्यज्ञ–अतिथियज्ञ–बलिवैश्वदेवयज्ञ, सेवा, परोपकार, सब प्राणियों के प्रति मित्र की दषष्टि रखना, दुःखियों का दुःख हरण करना, निर्बलों की रक्षा करना, स्त्रियों का सम्मान करना, निर्लोभी होना, काम व कोध पर विजय पाना आदि जैसे गुण ही धर्म है और इन्हीं से ईश्वर प्रसन्न होता है। इसके विपरीत जो कार्य व व्यवहार हैं वह पन्थ व मजहब आदि हो सकते है, धर्म कदापि नहीं। आज के युग में यही सबसे बड़ा सन्देश हो सकता है कि सभी लोग असत्य का त्याग कर सत्य को अपनाये। इसके साथ हमें अपने जीवन का लक्ष्य भी निर्धारित करना है और उसे प्राप्त करने के साधनों का भी पता लगाना है। **दर्शनों में इस विषय पर विस्तार से विचार हुआ है। उनके अनुसार असत्य को छोड़कर सत्य को अपनाना, अविद्या का नाश व विद्या की वषद्धि करना, ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जानना व उसको ध्यान व चिन्तन द्वारा उपासना से प्राप्त करना अर्थात् उसका साक्षात्कार करना ही मनुष्य के जीवन का लक्ष्य सिद्ध हुआ है।** ऐसा होने पर ही मनुष्य के सभी प्रकार के दुःखों की निवषति होती है। काम–कोध व लोभ से रहित व पूर्ण ज्ञानी होकर सभी प्राणियों की अधिकाधिक सेवा करना आदि ही वह साधन हैं जिनसे मनुष्य जन्म–मरण रूपी दुःख से छूट कर मुक्ति वा मोक्ष को पाता है। इन सब विषयों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिए महर्षि दयानन्द के समग्र साहित्य सहित वेद, वैदिक साहित्य को पढ़ाना अनिवार्य है। बिना इनके अध्ययन से जीवन को यथार्थ रूप में जाना नहीं जा सकता और न ही मानव जीवन सफल हो सकता है।

निष्कर्ष रूप में हम यही कह सकते हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ही संसार में एकमात्र सच्चे ईश्वर पुत्र वा ईश्वर दूत तथा सच्चे सन्देश वाहक थे। उनके ग्रन्थों का अध्ययन करके ही हम व संसार के लोग अपने जीवनों को सफल कर सकते हैं।

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

thearyasamaj.org

'प्राचीन काल में भारत से दूर देशों में मनुष्यों का जीवन'

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

सत्यार्थ प्रकाश के त्रेहरवें समुल्लास का अध्ययन करते हुए हमारे मन में कई बार विचार आया कि लगभग दो हजार वर्ष पहले यरूशलम व उसके आसपास तथा योरूप आदि के लोगों का जीवन व दिनचर्या किस प्रकार की रही होगीं इसका कारण बाइबिल में जो विचार दिये गये हैं उससे लगता है कि वह उस काल के सभ्य या असभ्य लोगों के ज्ञान, उनकी मानसिकता व सामयिक परिस्थितियों को व्यक्त करती हैं एक विचार तो यह आया कि क्या तब मनुष्य वस्त्रध ारण करते थे, यदि करते थे तो उन वस्त्रों को कौन व कहां किस प्रकार से बनाता थां क्या इन देशों में रूई होती थी या नहीं, उसका सूत कातना, उस सूत के किए चरखों की आवश्यकता रही होगां चरखे के बनाने का ज्ञान उन्हें कब व कैसे प्राप्त हुआ होगा? फिर यदि सूत है तो उससे वस्त्र बनाना कोई सरल कार्य नहीं हैं यह तो निश्चित है कि वह किसी न किसी प्रकार के बस्त्रों का प्रयोग करते थें इसका अर्थ है कि या तो वहां वस्त्र बनता होगा या फिर वह किसी अन्य देश व देशों से प्राप्त करते होंगें इससे यह भी पता चलता है कि उस समय में व्यापार हुआ करता थां हम पुस्तकों में पढ़ते हैं कि भारत की धर्म, संस्कशति व सभ्यता दुनियां में सबसे प्राचीन हैं भारत से ही धर्म व संस्कशति एवं सभ्यता पहले मिस्र में गई और यहां से आगे बढ़ती हुई यूनान व रोम पहुंचीं अब यदि हमारे देश भारत या आर्यावर्त से ज्ञान—विज्ञान वहां गया तो हमारे मनुष्य भी इन देशों में अवश्य ही जाते—आते रहे होगें और इन देशों में बस गये या बसे हुए लोग भारत आते रहे होंगें अभी हम वस्त्र या वेशभूषा की बात कर रहे थे परन्तु अब अनुमान से यह ज्ञात होता है कि न केवल वस्त्र ही भारत से वहां जाते थे अपितु अन्य खाने—पीने व सभी प्रकार का सामान जिसमें धातुओं से बने बर्तन, कागज, स्याही, लेखनी, भवन निर्माण कला या विधि, रोगों की चिकित्सा का ज्ञान, नाना प्रकार के भोजन बनाने की विधि व उपासना पद्धति भी वहां अवश्य ही गई होगीं कालान्तर में, महाभारत काल के बाद आरम्भ मध्यकाल में, भारत में ही अव्यवस्था हो जाने के बाद हमारे देश के लोगों का वहां जाना कम या समाप्त हो गया और वहां के लोगों को आगे सहायता व शिक्षा, ज्ञान व अन्य पदार्थ व सामग्री न मिलने के कारण वहां के लोगों ने उपलब्ध साधनों से ही अपना जीवनयापन कि ां जिस प्रकार वर्षा ऋतु के बाद जंगलों में या खेतों में निराई, गुड़ाई, खाद, पानी व अन्य व्यवस्थाये समुचित रूप से न की जायें व तो वहां झाड़—झंकार उत्पन्न हो जाती है, उसी प्रकार महाभारत काल के बाद हमारे देश में भी यही हुआ और दुनियां के अन्य देशों में भी हुआं सौभाग्य से कोलम्बस व वास्को डि गामा के अमेरिका व भारत में पदार्पण से धीरे—धीरे दुनियां के देशों में सम्पर्क बढ़ना आरम्भ हुआ और फिर एक देश की कुछ बातें दूसरे देशों में व उन—उन देशों की अच्छी व बुरी बातों का हमारे देश में प्रवेश होता रहा और जो हमारा देश व अन्य देश हैं वह परस्पर एक दूसरे के प्रभाव से निर्मित आचार—विचार व रहन—सहन व संस्कशति सभ्यता के मिश्रण होने से कुछ—कुछ बातों में एक दूसरे के अनुरूप बने

हम यहां यह बताना चाहते हैं कि सशष्टि की आदि मे परमात्मा से भारत के लोगों को चार वेदों का ज्ञान प्राप्त हुआ थां इस ज्ञान का भारत के सभी लोगों में प्रचार था और हमारे प्राचीन व प्राचीनतम गुरूकुलों में इन्हीं चार वेदों का अध ययन विद्यार्थियों व ब्रहमचारियों को कराया जाता थां पीढ़ी दर पीढ़ी यह परम्परा सशष्टि के आदि काल से महाभारत काल तक अनविच्छिन्न अथवा अबाधित रूप से चलती रही इस प्रकार से भारत में चार वेद व वैदिक साहित्य का प्रचार रहां स्वाभाविक है कि भारत के निकट व दूरवर्ती स्थानों में जहां—जहां अज्ञान व भारत से कम ज्ञान रहा होगा वहां के लोग भारत से ज्ञान प्राप्त करते रहे होंगें भारत के लोगों का धार्मिक, अहिंसक, परोपकारी, वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से युक्त होना आदि कारणों से भारतवासियों में अन्य देशों के लोगों को ज्ञान दिया होगा व उन—उन देशों के लोगो ने अपने पड़ोसियों को ज्ञान दिया होगां इस स्वाभाविक परम्परा के बढ़ने से सारा विश्व वैदिक ज्ञान, धर्म व संस्कशति से पूर्ण हो गया था या हुआ होगा ऐसा अनुमान स्वाभाविक रूप से होता हैं कुछ हजार वर्ष पूर्व वशहत्तर भारत के तक्षशिला व नालन्दा आदि अनेक पुस्तकालय इन साहित्यों से भरे पड़े थें विदेशी विधर्मियों ने ईसा की 8 हवीं शताब्दी में भारत पर आक्रमण आरम्भ किये जो लगातार बढ़ते गये और धर्म व संस्कशति विहीन आक्रमणकारियों ने भारत के छोटे व बड़े पुस्तकालयों को आग लगाकर नष्ट कर दियां महीनो तक ज्ञान—विज्ञान से भरपूर वह साहित्य जलता व सुलगता रहां ऐसा भी वर्णन पढ़ने को मिलता है कि विधर्मी आक्रमणकारी शासकों ने उस बहुमूल्य साहित्य के कागजों व पशष्ठों से अपने हरम का पानी गरम कियां ऐसे अनिष्ट कार्यो से धर्म, ज्ञान, विज्ञान, संस्कशति व सभ्यता के गूढ़ रहस्यों से युक्त अमूल्य साहित्य अग्नि के द्वारा नष्ट किया गयां यहां विदेशी आक्रमण, युद्ध, जय, पराजय, धर्म—अधर्म आदि हमारे लेख के विषय के अन्तर्गत नहीं हैं इतना ही कहना उचित है कि वह उन्नीसवीं शताब्दी में प्राचीन धर्म व संस्कशति की पुरानी पुस्तकों व कुछ इनी—गिनी पुस्तकों व उनके विद्वानों से वैदिक ज्ञान को पढ़कर व जान—समझकर स्वामी दयानन्द ने विलुप्त वैदिक ज्ञान—विज्ञान को काफी हद तक पुनर्जीवित कर दिया जिससे उनके समय से अब तक व आगे के लिए प्राचीनतम् भारत को जानना आसान हो गयां इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि भारत से ही मिलता—जुलता दुनियां के सभी देशों का हाल रहा होगा क्योंकि दुनियां में बसे हुए सभी लोग भारत से ही समय—समय पर वहां जाकर बसते रहे अथवा यहां से चारों दिशाओं में बढ़कर उन्होंने अपनी

बस्तियां बनाई, वहां कुछ वर्षो तक रह कर उनमें से कुछ अन्य चारों दिशाओं में फैलते रहे और फिर इसी क्रम के जारी रहने से सारी दुनियां में आर्यावर्त्त से आरम्भ होकर शेष विश्व में मनुष्यों का आविर्भाव होता रहां सत्य के अन्वेषी व प्राचीन इतिहास के अपूर्व विद्वान महर्षि दयानन्द के समग्र साहित्य को पढ़कर इसी प्रकार का चित्र प्रत्येक अध्येता के मानस में प्रकट होता हैं वेद एवं वैदिक साहित्य के अपने समय के अपूर्व विद्वान, वेदज्ञ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने चतुर्वेद भाष्य की भूमिका ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका नामक ग्रन्थ के रूप में लिखीं इस ग्रन्थ को पढ़कर यूरोप के प्रमुख विद्वान प्रो. मैक्समूलर ने उनके अनेक निष्कर्षो को स्वीकार किया हैं हम समझते हैं कि स्वामी दयानन्द व प्रो. मैक्समूलर के विचारों की एकता व समानता से दुनियां में मनुष्यों के बसने पर कोई विवाद नहीं हैं यहां पश्चिमी विद्वान मैक्समूलर का वचन उद्धशत करते हैं – 'यह निश्चित हो चुका कि हम सब पूर्व से ही आये हैं इतना ही नहीं, हमारे जीवन की जितनी भी प्रमुख और महत्वपूर्ण बातें हैं, सबकी सब हमें पूर्व से ही मिली हैं ऐसी स्थिति में जब हम पूर्व की ओर जायें तभी हमें यह सोचना चाहिए कि पुरानी स्मशतियों को संजोये हम अपने पुराने घर की ओर जा रहे हैं' अंग्रेजी में अपनी पुस्तक ष्पदकपं रू ॉंज बंद पज जमंबी नेघ्ठ ;चंहम 29द्ध पर उन्होंने लिखा कि श्ॅम ंसस बवउम तिवउ जीम म्ंजकृंसस जींज ूम अंसनम उवेज ॅ बवउम जव ने तिवउ जीम म्ंजए ंदक इल हवपदह जव जीम म्ंजए मअमतल. इवकल वनहीज जव मिमस जींज ॅम पे हवपदह जव ॅपे श्वसक ॅिवउमश निसस व ि उमउवतपमेए प ि विदसल ूम बंद तमंक जीमउण्

भारत से बाहर के देशों में हम देखते हैं कि 4,000 से 4,500 वर्ष पहले वहां धर्म ग्रन्थों के रूप में जन्द अवेस्ता का उदय हुआं इससे पूर्व के किसी धर्म ग्रन्थ की चर्चा विद्वानों मे नहीं की जाती हैं जन्द अवेस्ता के बाद, आज से लगभग 2,000 वर्ष पूर्व, बाइबिल व उसके पश्चात, लगभग 1,450 वर्ष पूर्व, कुरआन पुस्तकें अस्तित्व में आयीं जो मजहबी पुस्तकें हैं जन्दा अवेस्ता से पहले भारत से इतर किसी भी देश में किसी अन्य पुस्तक का अस्तित्व में न आना या उसका विवरण प्राप्त न होना भारतवासियों की इस बात को सत्य सिद्ध करता है कि महाभारत काल तक भारत से ही ज्ञान विज्ञान वहां गया था व जाता रहा थां महाभारत के बाद से रूकावटें आयीं भारत में भी पतन हुआ तथा अतिदूर होने के कारण वहां भी ज्ञान का पराभव व पतन हुआं विवेक व चिन्तन के आधार पर हम यह अनुमान भी लगाते हैं कि भारत के निकटवर्ती देशों में अवश्य पश्चिम के देशों से अधिक वैदिक व आर्ष ज्ञान के अनुरूप व कुछ भिन्न धर्म, संस्कशति व सभ्यता का अस्तित्व, प्रभाव, प्रयोग व प्रचलन रहा हैं हम यह भी अनुमान करते थे कि किसी न किसी रूप में परस्पर व्यापार भी विद्यमान रहा हैं ऐसे भूभागों व देशों में व्यापार किया ही जा सकता है जो परस्पर भूमि मार्गो से जुड़े थे व समीपवर्ती थें यदि व्यापार नहीं होता था दैनिक जीवन की बहुत सी वस्तुओं के एक स्थान पर उत्पन्न न होने के कारण वहां उन वस्तुओं का अभाव होता और इससे जीवनयापन दुष्कर होतां | स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उपदेश मंजरी के पांचवें प्रवचन में बताया है कि प्राचीन काल में सशष्टि उत्पन्न होने के कुछ काल बाद ही आर्यो ने वायुयान बना लिया थां वह वायुयान से पशथिवी के अन्य स्थानों व प्रदेशों को ढूंढते व उनका अवलोकन करते थे और जो स्थान उन्हें अच्छा लगता था वहां अपनी बस्तियां बसा लेते थें इससे यह अनुमान कर सकते हैं कि प्राचीन काल में आर्य लोग ही देश देशान्तर में इस प्रकार से बसते गयें जो नये–नये बसते थे, वह संस्कशतज्ञ थें उनकी सन्तानें हुईं कुछ पीढ़ियां ज्ञान व भाषा की दशष्टि से योग्य थीं परन्तु कालान्तर मे वह अपने पूर्वजों के ज्ञान व विद्या को स्थिर न रख सकीं इस प्रकार का उत्थान पतन राष्ट्रों में भी होता है और समाज व परिवारों में भी होता हैं यहां इतना कहना आवश्यक है कि वैदिक धर्म, संस्कशति व सभ्यता 1.96 अरब पुरानी हैं इस लम्बे समय में अनेकों बार उत्थान व पतन हुआ होगां भौगोलिक परिवर्तन भी अनेक प्रकार के अनेक बार हुए होंगें ऐसा भी रहा होगा कि किसी समय अति प्राचीन काल में आर्यावर्त्त में आज के यूरोप आदि उन्नत देशों से भी अधिक ज्ञान–विज्ञान भारत में रहा होगां कई बार वह उन्नत होकर फिर पराभव को प्राप्त हुआं इस प्रकार चलते–चलते आज की स्थिति आयी हैं और हम लोगों को उस उन्नति काल का किंचित भी ज्ञान नहीं हैं इस आधार पर दोनों ही बाते हैं कि न तो हम यह कह सकते हैं कि कभी भारत में उन्नति नहीं रही और बिना प्रमाणों के यह भी नहीं कह सकते कि प्राचीन भारत किस सीमा तक उन्नत व विकसित थां लेकिन कभी उन्नति हुई ही नहीं, यह कहना व मानना भी असम्भव हैं

एक अन्य समस्या पर भी विचार करते हैं बताया जाता है कि वैदिक धर्म व संस्कशति 1,96,08,53,114 वर्ष पुरानी हैं यदि भारत की धर्म व संस्कशति 1.96 अरब वर्ष पुरानी है तो दुनियां के अन्य देशों की धर्म व संस्कशतियां भी 1.96 अरब से कुछ कम वर्ष पुरानी होनी चाहियें मान लेते हैं कि यह 1.5 अरब वर्ष पुरानी हैं भारत में यवन आये और उन्होंने यहां हमारे वेद व वैदिक साहित्य को, जो तक्षशिला व नालन्दा आदि के पुस्तकालयों में था, जला कर नष्ट कर डालां इससे जुड़ा इतिहास देशवासियों को पता हैं ऐसी घटनायें पहले मुस्लिम देशों में हुईं होंगी और बाद में यह लोग जिन–जिन देशों में गये होगें, वहां–वहां के उपलब्ध साहित्य, जिसमें वैदिक साहित्य भी रहा होगा, नष्ट कर दिया गया होगां जिन देशों में मुस्लिम व यवन नहीं पहुंच सके या उन्हें सफलता नहीं मिली, वहां का साहित्य सुरक्षित क्यों नहीं रहा, यह प्रश्न विचारणीय हैं ऐसे देशों में वह स्थान आते हैं जहां ईसाई व अन्य लोग व जातियां बसती थीं ऐसे देशों के इतिहास में महाभारतकालीन व इससे पूर्व का साहित्य उपलब्ध नहीं होतां ऐसे भी उदाहरण नहीं हैं कि वहां प्राकशतिक आपदा की कोई बड़ी घटना हुई हो जिसमें वहां का समस्त साहित्य नष्ट हुआ हों अतः वहां कुछ प्राचीन साहित्य मिलना चाहिये थां इससे तो यही लगता है कि आर्य लोग अमेरिका व तत्समीपस्थ स्थानों पर महाभारत काल के बाद जाकर बसें ऐसा सम्भव नहीं लगता जिसका कारण यह है कि 1.96 अरब वर्षों की अवधि में आर्य लोग

thearyasamaj.org

केवल भारत व आसपास के स्थानों वा क्षेत्रों में ही बसे रहे व आगे, खाली प्रदेशों में जाकर नहीं बसे, ऐसा होना इसलिए भी सम्भव नहीं है कि महाभारत आदि ग्रन्थों में भारत के राजाओं का अमेरिका व अन्य दूरस्थ द्वीपों में आना–जाना कहा गया हैं इससे तो यही कहा जा सकता है उन स्थानों के लोग अन्य–अन्य कारणों से अपना धार्मिक व सांस्कशतिक साहित्य सुरक्षित नहीं रख सकें यद्यपि समुद्रपारीय अन्य देशों में भी वेद से सम्बन्धित साहित्य उपलब्ध होना चाहिये थां हमारे विद्वान इस विषय में चिन्तन कर अपने अनुमान व प्रमाण सूचित कर सकते हैं

संसार में समय समय पर अनेक चमत्कार हुए हैं हम यहां एक नये चमत्कार की चर्चा करना चाहते हैं यह चमत्कार भाषा की उत्पत्ति का चमत्कार हैं सशष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने जो मनुष्य बनाये वह भाषा से अनभिज्ञ थें भाषा से अनभिज्ञ व्यक्ति ज्ञानशून्य होता हैं ईश्वर ने भाषा को जानने व बोलने के साधन के रूप में कान, बुद्धि व मुंह हमें दिया हैं मन का भी इसमें सहयोग मिलता हैं कानों से सुनकर मन द्वारा बुद्धि से सुनी बात या विचारों को समझा जाता हैं उसके उत्तर में या स्वतन्त्र रूप से जब बोलते हैं तो मस्तिष्क से सोचकर बुद्धि द्वारा उसकी युक्तियुक्ता को विचार कर मन को प्रेरित कर मुंह से बोला जाता हैं भाषा को समझने, जानने व बोलने के साधन ईश्वर ने बनाये हैं व सभी मनुष्यों को दिये हैं सशष्टि व मनुष्यों की उत्पत्ति कर ईश्वर ने भाषा के बोलने व समझने के सभी साधन तो हमें दिये परन्तु भाषा एवं ज्ञान मनुष्य के उत्पन्न हो जाने के बाद दिया गया हैं यह ऐसा ही है जैसे की कम्प्यूटर बन जाने के बाद ही सभी साफ्टवेयर उसमें बाद में अपलोड करते हैं ईश्वर भी मनुष्यों को उत्पन्न कर सबसे पहले चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को चार वेदों यथा ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद का ज्ञान इन ऋषियों की आत्माओं के भीतर अपने जीवस्थ स्वरूप, जो कि निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वान्तरयामी है, देता है अथवा स्थापित करता हैं ईश्वर हमारी आत्मा के भीतर हर क्षण उपस्थित रहता हैं इसका प्रमाण गलत काम करने पर भय शंका व लज्जा का होना, ईश्वर की प्रेरणा व उसके द्वारा पैदा की जाने वाली अनुभूति से सम्भव होता हैं वर्तमान में इसी प्रकार से अच्छा काम करने पर ईश्वर हमें आनन्द, सुख, सुकून, प्रसन्नता, प्रफुल्लता, शान्ति की अनुभूति कराता हैं सर्वशक्तिमान होने के कारण ईश्वर के लिए इस प्रकार से भाषा व वेदों का ज्ञान देना कोई कठिन नहीं हैं यह सम्भव कोटि में आता हैं सशष्टि के आरम्भ में सभी मनुष्य वेदों का अर्थ जानते थें कठिनाई आने पर ऋषि इसका ज्ञान करा देते थें बाद में स्मशति ह्रास होने पर हमारे ऋषियों ने सहायता के लिए व्याकरण के ग्रन्थ बना दिये जिससे वेदार्थ को जाना जा सकता था व अब भी जानते हैं महर्षि पाणिनी की अष्टाध्यायी, महर्षि पंतजलि का अष्टाध्यायी महाभाष्य, महर्षि यास्क का निरूक्त व निघण्टु आदि ग्रन्थ संसार के सबसे बड़े आश्चर्य हैं शब्द की उत्पत्ति, उसका घात्वर्थ, शब्द का निर्वचन आदि संसार के अन्य आश्चर्यो से कोई कम नहीं हैं भारत के लोग धन्य हैं जिन्होंने इन ग्रन्थों को देखा, पढ़ा व समझा हैं जिनकों यह सौभाग्य नहीं मिला वह उसके लाभ से वंचित हैं ऐसे लोग जो स्वार्थवश वैदिक संस्कशत भाषा को पढ़ना नहीं चाहते व विरोध करते हैं वह अभागे लोग हैं व उनका यह जीवन अधिकांशतः व्यर्थ सिद्ध होता हैं हम यहां इतना और कहेगें कि यदि ईश्वर भाषा का ज्ञान न देता तो मनुष्य कितना भी प्रयास करने पर कभी भी भाषा उत्पन्न नहीं कर सकते थें भाषा के लिए अक्षर व वर्णो का ज्ञान होना चाहियें उसका ज्ञान शब्दों व वाक्य व उनके अर्थो से होता है और यह अक्षरों से ही बनते हैं अतः भाषा का मूल आधार अक्षर हैं जो मनुष्य कदापि नहीं बना व निर्धारित कर सकते हैं यह भी ध्यातव्य है कि वैदिक भाषा ईश्वरकशत हैं तथा इसके अतिरिक्त सभी अन्य भाषायें मनुष्यकशत अर्थात् मनुष्यों के द्वारा बनी हैं जो क्रमशः वैदिक भाषा के उत्तरोत्तर विकार व अपभ्रंस से प्रचलन में आयीं हैं अनेक भाषाओं से शब्द लेकर भी किसी एक प्रचलित भाषा को समश्द्ध किया जा सकता हैं

संसार में उपलब्ध सभी मत, मजहब व धर्म सम्बन्धी पुस्तकों व ग्रन्थों का अध्ययन कर यह ज्ञात होता है कि सारे ब्रह्माण्ड का रचयिता एक ही निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तरयामी, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान ईश्वर हैं सभी मनुष्य, स्त्री–पुरूष व प्राणी जगत को भी उस एक ही ईश्वर ने बनाया हैं ईश्वर, परमात्मा, ळवक, अल्लाह व खुदा आदि सभी एक ईश्वर के नाम हैं जो परस्पर पर्यायवाची शब्द हैं संसार के सभी मनुष्यों का धर्म भी एक ही सिद्ध होता है जो कि मुख्यतः सत्य बोलना, सत्य कार्यो को करना, सत्याचार, निराकार ईश्वर की सगुण व निर्गुण उपासना, मूर्तिपूजा आदि न करना, अग्निहोत्र यज्ञ, परोपकार, अंहिसा, न्याय, दया, सेवा, दूसरों की सहायता आदि हैं धर्म व सत्य का प्रमाण वेदों से ही होता हैं वेद स्वतः प्रमाण हैं और जो ईश्वरीय ज्ञान वेदों के अनुकूल है वह परतः प्रमाण हैं संसार में जितने भी महापुरूष व महात्मा आदि हुए हैं वह सब अच्छे गुणों के कारण सबके पूजनीय हैं और उनमें जो–जो कुछ, कम व अधिक अवगुणों से युक्त यदि हों, तो वह त्याज्य हैं यह आवश्यक नहीं है कि संसार में उत्पन्न सभी महापुरूष व महात्मा शतप्रतिशत सत्य गुणों से युक्त ही रहे हों जीवात्मा वा मनुष्य के अल्पज्ञ होने से किसी भी महापुरूष में अल्प गुण व अवगुण भी हो सकते हैं ईश्वर का अवतार कदापि नहीं होता न हो सकता हैं आज तक ईश्वर ने कभी अवातर नहीं लियां जिन्हें अवतार कहा व माना जाता है वह अपने समय के युगपुरूष, महापुरूष व महात्मा थें ईश्वर सर्वशक्तिमान है अतः उसे अपने किसी भी कार्य में किसी दूत, अवतार, फरिश्ते, विशेष पुत्र व सन्देशवाहक आदि की आवश्यकता नहीं होतीं यदि कोई ऐसा मानता है तो वह व्यक्ति अपने समय का सदगुणवान व सामान्य मनुष्यों से कुछ थोड़ा अधिक ज्ञानी, शक्तिवान व समाजसेवक के रूप में हो सकते हैं

हमने इस लेख में स्वतन्त्र रूप से अपने विचार प्रस्तुत किए हैं हमने वही लिखा है जो कि हमें वैदिक साहित्य के अध्ययन से जाना है या फिर चिन्तन व विचार करने पर अनुमान लगता हैं हम आर्य समाज के विद्वानों से अनुग्रह करते हैं कि वह इस विषय में अपने विचारों को आर्य जनता के सामने प्रस्तुत करें जिससे सबको लाभ मिल सकें

thearyasamaj.org

'मुमुक्षु स्वामी दयानन्द ने दीपावली को देहत्याग के लिए क्यों चुना?'

महर्षि दयानन्द आर्य समाज के संस्थापक हैं। आप विश्व के इतिहास में सर्वोत्तम वेदवेत्ता, वेदज्ञ, वेद प्रचारक, वेदोद्धारक, वेदभक्त, वेदमूर्ति, वेदर्षि, वेदभाष्यकार, वेदपुरूष, वेदपुत्र, वेदरक्षक तथा वेदों को ईश्वर प्रदत्त ज्ञान मानने व अपनी इस मान्यता को तर्क, प्रमाण से सत्य सिद्ध करने वाले अपूर्व महापुरूष हैं। इन गुणों के साथ आप महान देशभक्त, देश को सर्वप्रथम स्वराज्य वा आजादी का विचार देने वाले, स्वराज्य को सुराज्य से वरीयता देने वाले, स्वराज्य के प्रथम उद्‌घोषक, एतिहासिक ऋषियों मनु, पतंजलि, कपिल, कणाद, गौतम, व्यास, जैमिनी आदि के प्रति श्रद्धावान, अपने गुरू दण्डी स्वामी विरजानन्द के प्रिय, स्वयं व अपने गुरू की यश व कीर्ति को दिग्दिगन्त फैलाने वाले, सिद्ध योगी व योगेश्वर, सत्य के सबसे बड़े आग्रही, सत्य को ही धर्म का पर्याय मानने वाले, अद्वितीय और अपूर्व समाज संशोधक एवं सुधारक, निर्बलों के बल, अछूतोद्धार के पितामह व जनक, स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार प्रदान करने वाले, नारी सम्मान व उसकी मान मर्यादा के रक्षक, नारी उद्धारक, मानव मात्र की समानता के पोषक व जुझारू आन्दोलनकर्ता, अज्ञान–अन्धविश्वास–कुरीति–अन्याय निवारक व वाणी व तर्क द्वारा इनके खण्डनकर्ता आदि अनेकानेक गुणों से विभूषित व परिपूर्ण थे। आप एक ऐसे महापुरूष भी थे जिन्होंने **''न भूतो न भविष्यति''** की कहावत को अपने जीवन में अपने ज्ञान, योग्यता, तप व कार्यों से चरितार्थ किया। वेदों का पुनरूद्धार करके आपने विश्व मानवता की जो सेवा की है उसका मूल्यांकन करना असम्भव है। हम उनके इस वेदोद्धार के कार्य पर संक्षेप में विचार करना आवश्यक समझते हैं। वेद मनुष्य का सर्वस्व हैं। ऐसा वह कैसे है? इस प्रकार से कि वेद ही ईश्वर द्वारा आदि मनुष्यों व हम सब के पूर्वजों को दिया गया आदि ज्ञान, आदि भाषा व आदि वाणी की पुस्तकें हैं। **यदि वेद न होते तो मनुष्य कभी बोल भी न सकते।** इसका कारण यह है कि नैमित्तिक ज्ञान सीखने से व ऊहा से ही प्राप्त होता है। ऊहा के लिए किसी भाषा का ज्ञान व बोलना आना आवश्यक है। विचार व चिन्तन करने पर विदित होता है कि यदि आरम्भ में ईश्वर ने संस्कृत भाषा न दी होती तो मनुष्य कभी भी स्वयं व सभी मिलकर भी भाषा की उत्पत्ति व रचना नहीं कर सकते थे। ऐसा इस उदाहरण से विदित होता है कि यदि दुर्भाग्य से किसी शिशु की माता जन्म देने के बाद दिवंगत हो जाये और उस सन्तान की परवरिश करने वाला परिवार में कोई न हो तो वह बच्चा अपने पैरों से चलना व बोलना कभी भी नहीं सीख सकता। उस शिशु की मृत्यु निश्चित होती है। इसी प्रकार से यदि सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर युवा स्त्री व पुरूषों को उत्पन्न करने के बाद उन्हें भाषा सहित वेदों का ज्ञान न देता तो मनुष्य न तो भाषा वह भाषा बना सकते, न बोलना सीखते और न ही किसी प्रकार की उन्नति कर सकते थे। नैमित्तिक ज्ञान के लिए भी हमें गुरू, आचार्य, माता–पिता की आवश्यकता होती है। सृष्टि के आरम्भ में यह लोग भी नहीं थे। अतः यह सुनिश्चित है कि सृष्टि के आरम्भ में सृष्टिकर्ता ईश्वर ने ही पहली पीढ़ियों के मनुष्यों को भाषा सहित वेदों का ज्ञान दिया था। वह ज्ञान महाभारत काल तक निर्बाद्ध रूप से पल्लवित, पुष्पित व फलता–फूलता रहा परन्तु महाभारत के भीषण युद्ध के बाद अव्यवस्था व कुव्यवस्थाओं के कारण वह आंशिक रूप से विलुप्त हो गया जिससे धीरे–धीरे संसार में अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड, अन्याय व कुरीतियों में वृद्धि होती रही और इसी का परिणाम हमारी यवनों व अंग्रेजों की गुलामी थी। वेद का महत्व इस कारण भी है कि यह ईश्वर द्वारा प्रदान किया गया ज्ञान है जिसमें इतिहास किंचित भी नहीं है और समस्त पुस्तक आध्यात्म, विज्ञान, सामाजिक ज्ञान, यज्ञ, उपासना व नाना शिक्षाओं आदि अनेकानेक विषयों पर तथ्यात्मक व स्वतः प्रमाण ज्ञान से परिपूर्ण है। आज ज्ञान व विज्ञान ने जितनी भी उन्नति की है उस सबका मूल आधार वेद ही है।

महर्षि दयानन्द ने वेदों का पुनरूद्धार कर वेदों के सत्य अर्थों का देश भर में व देश से बाहर भी प्रचार किया। उन्होंने संस्कष्त के साथ हिन्दी का भी भरपूर सहयोग लिया या यह कह सकते हैं कि उन्होंने संस्कष्त के साथ–साथ हिन्दी साहित्य को भी समष्द्ध किया। सदियों से जो वेद केवल एक वर्ग के अधिकार में थे उन तक सष्ष्टि के 1 अरब 96 करोड़ वर्षों के इतिहास में पहली बार आम आदमी की पहुंच हो गई। इससे ज्ञात हुआ कि वेदों के नाम पर स्वार्थी लोगों ने अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिये मिथ्या मान्यतायें आम लोगों में प्रचलित कर रखीं थीं जो वेदों के साथ–साथ देश के पराभव का भी कारण सिद्ध हुईं। **वेदों के पुनरूद्धार व सत्य वेदार्थ से समाजोत्थान की नींव पड़ी।** महर्षि दयानन्द की प्रेरणा से आर्य समाज ने देश भर में धड़ाधड़ गुरूकुल एवं दयानन्द ऐंग्लों वैदिक कालेज खोले। इस क्रान्तिकारी कार्य से देश में अज्ञान का अन्धकार दूर होकर ज्ञान का प्रकाश फैला। स्वामी दयानन्द ने यज्ञ करने और यज्ञोपवतीत धारण करने का भी सभी द्विजों के साथ स्त्रियों व शूद्रों को भी अधिकार प्रदान किया जिससे स्त्री व शूद्र वर्ण के सभी आर्यजनों ने वेद मन्त्रोच्चार से यज्ञ करना आरम्भ कर दिया। यह सभी कार्य महर्षि दयानन्द के क्रान्तिकारी

thearyasamaj.org

भारत और पाकिस्तान को संयुक्त रूप से नोबेल पीस प्राइज का मिलना

क्या पैगाम है नोबेल शांति पुरस्कार का?

सम्मान

प्रभात कुमार रॉय

भारतीय उपमहाद्वीप के दो चाइल्ड राइट एक्टिविस्ट भारत के कैलाश सत्यार्थी ओर पाकिस्तान की मलाला यूसुफजई को वर्ष 2014 के नोबल पीस प्राइज से संयुक्त तौर पर नवाजा गया। भारत और पाकिस्तान के बाल अधिकार कार्यकर्ताओं को संयुक्त तौर पर नोबेल पीस प्राइज द्वारा सम्मानित किया जाना, वस्तुतः दोनों राष्ट्रों के लिए राष्ट्रीय आत्मगौरव से ओतप्रोत होकर बहुत गर्व करने की शानदार बेला है। भारत और पाकिस्तान मूलतः एक ही कुनबे के दो सार्वभौमिक राजसत्ता वाले राष्ट्र हैं, जोकि सन् 1947 में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शिकंजे से मुक्त होकर अस्तित्व में आए थे। तकरीबन दो सौ वर्षों की ब्रिटिश गुलामी को दौर में समूचे भारत का भीषण आर्थिक शोषण किया गया और देश का नब्बे फीसदी जनमानस अशिक्षित और अत्यंत दरिद्र होकर रह गया था। भयानक सांप्रदायिक विग्रह के पश्चात हासिल हुई खंडित आजादी के तहत भारत और पाकिस्तान दोनों को ही विरासत में तकरीबन एक जैसी सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। भारत और पाकिस्तान के मध्य बुनियादी फर्क रहा कि पाकिस्तान एक मजहबी इस्लामिक, किंतु लोकतांत्रिक राष्ट्र के तौर पर मोहम्मद अली जिन्ना की कयादत में स्थापित हुआ था और भारत एक धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में समाजवादी समाज का स्वप्न आंखों में संजोए हुए पं. जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में उदित हुआ था।

भीषण ब्रिटिश साम्राज्यवादी शोषण और उत्पीड़न ने दोनों राष्ट्रों को घनघोर गरीबी और अशिक्षा विरासत में बख्श दी थी। भारत और पाकिस्तान में बेहद गरीब परिवारों के लाखों बच्चें स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करने के स्थान पर पेट पालने के लिए मासूम उम्र में मजदूरी करने के लिए अभिशप्त रहे हैं। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू को देश के समस्त बच्चों का चाचा नेहरू कहलाने का श्रेय हासिल हुआ और पं. नेहरू का जन्म दिवस राष्ट्रीय बाल दिवस के रूप में मनाया जाता रहा है। किंतु दुर्भाग्यवश गांधी और नेहरू के भारत में समतामयी समाजवादी समाज की स्थापना का स्वप्न साकार नहीं किया जा सका। सब बच्चों की शिक्षा अनिवार्य और एक समान हो महज एक राष्ट्रीय नारा ही बनकर रह गया। भारत की कोई हुकूमत अभी तक राष्ट्र के सभी बच्चों को स्कूल भेजने का समुचित प्रबंध नहीं कर सका और आज भी भारत माता के लाखों बच्चें मजदूरी करने के लिए विवश हैं। हांलाकि भारतीय संसद द्वारा संवैधानिक तौर पर शिक्षा को बाकायदा एक मौलिक अधिकार बना दिया गया है।

सन् 1980 में डॉ.राममनोहर लोहिया का प्रतिबद्ध अनुयायी नौजवान कैलाश सत्यार्थी ने इलैक्ट्रिकल इंजीनियर के अपने कैरियर का परित्याग किया और बाल मजदूरी के अभिशाप से बच्चों को पूर्णतः मुक्त कराके स्कूलों में दाखिल कराने की मुहिम का आगाज किया। बाल मजदूरी के विरुद्ध शुरू की गई इस शानदार मुहिम को बचपन बचाओ आंदोलन का नाम प्रदान किया गया। बचपन बचाओ आंदोलन भारत में अनेक वर्षों तक गुमनाम संघर्षों के अनेक मुकाम तय करते हुए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ग्लोबल मार्च अगेंस्ट चाइल्ड लेबर के तौर पर जाना पहचाना गया और इसका विस्तार क्रमशः एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के राष्ट्रों में हुआ है। बाल मजदूरी के विरुद्ध गुमनामी में संघर्ष करता हुआ कैलाश सत्यार्थी कदम दर कदम आगे बढ़ता गया और देशभर में हजारों साथियों का एक कारवां शनैः शनैः तैयार होता चला गया। अनेक बार अपनी जान जोखिम डालकर शौहरत और प्रतिष्ठा की ख्वाहिश से कोसों दूर रहकर कैलाश सत्यार्थी ने बहुत एकाग्रता और अत्यंत समर्पण के साथ बाल मजदूरी के प्रश्न को राष्ट्रीय प्रश्न बनाने का जोरदार प्रयास किया। कैलाश सत्यार्थी को नोबल पीस प्राइज से नवाजा जाना, वस्तुतः बाल मजदूरी को विरुद्ध

स्वीडन सरीखे समाजवादी राष्ट्र ने यह प्रबल पैगाम दिया है कि युद्ध करना है तो आपस में नही करो, वरन् एकजुट होकर अशिक्षा से करो, अज्ञान से करो।

thearyasamaj.org

बचपन बचाओ आंदोलन के अप्रतिम संघर्ष और देशभर में फैले उसके हजारों कार्यकर्ताओं का शीर्ष सम्मान है, जिन्होने तकरीबन एक लाख बच्चों को खतरनाक उद्योगों के चंगुल से मुक्त कराया। साथ ही भारन और पाकिस्तान के दो चाइल्ड राइट एक्टिविस्ट को मुशतरका तौर पर प्रदान किए गए विशिष्ट नोबल पीस प्राइज को उन समस्त मजलूम और मासूम बच्चों की तरफ भारत और पाकिस्तान की हुकूमतों और समाज का समुचित ध्यान केंद्रित करने की शानदार पहल को तौर पर समझा जाना चाहिए, जो कि शिक्षा के अधिकार से वंचित और अभिशप्त होकर पारिवारिक गरीबी के कारणवश बालमजदूरी करने पर मजबूर रहे हैं। इस्लामिक स्टेट पाकिस्तान में बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के हालात तो भारत के मुकाबले बहुत अधिक बदतर और बेहाल बने रहे हैं। मजहबी कट्टरता के दलदल में धंसा हुआ पाकिस्तान तो बालिकाओं के शिक्षा क्षेत्र में बहुत अधिक पिछड़ता हुआ चला गया। सर्वविदित है कि तालीबान दहशतगर्दों के उदय में पाक हुकूमत का कितना किरदार रहा और तालीबान द्वारा अफगानिस्तान पर आधिपत्य स्थापित करने के संघर्ष में पाक फौज का जबरदस्त सहयोग रहा। अफगानिस्तान में तालीबान हुकूमत द्वारा मध्य युगीन बर्बरता को फिर से जिंदा कर दिया गया था। लड़कियों की तालीम के बरखिलाफ तालीबान हुकूमत द्वारा फरमान जारी कर दिया गया। पाकिस्तान में तालीबान प्रभुत्व वाले एक इलाके में बर्बरता का शिकार बन गई कम उम्र की युवा मलाला यूसुफजई जो कि बच्चियों की तालीम के लिए संचालित आंदोलन के लिए कार्यरत रही। अत्यंत जूझारु मलाला यूसुफजई सौभाग्यवश बर्बर तालीबान आक्रमण की शिकार होकर भी किसी तरह से जिंदा बच गई है। मलाला यूसुफजई अब तो पाकिस्तान में और दुनियाभर में बच्चों को तालीम का बुनियादी हक दिलाने की तहरीक की प्रबल पैरोकार के तौर पर जानी पहचानी जाती है। पाकिस्तान हुकूमत ने कश्मीर हड़पने के लिए प्रारम्भ से ही भारत पर फौजी आक्रमण करने की कुटिल नीतियों पर अमल किया। फलस्वरूप बहुत गरीब पाकिस्तान हुकूमत का अधिकतर वित्तीय बजट शिक्षा और स्वास्थ्य सरीखी बुनियादी राष्ट्रीय समस्याओं से निपटने के स्थान पर अपनी फौजी तैयारियों और युद्धों पर खर्च होने लगा। सन् 1965 में भारत से पराजित होकर और सन् 1971 की निर्णायक जंग में पूवी पाकिस्तान को गंवाकर भी पाक हुक्मरानों का रवैया कदाचित नहीं बदला और प्रॉक्सी वॉर के माध्यम से पाकिस्तान सन् 1988 से निरंतर भारत से कश्मीर में जूझ रहा है। प्रतिवर्ष पाकिस्तान अरबो-खरबों की धनराशि धर्मान्ध जेहादियों को प्रश्रय प्रदान करने में और सैन्य प्रशिक्षण प्रदान करने में खर्च करता रहा है।

अनेक दशक से जंग में उलझे हुए भारत और पाकिस्तान को नोबल शांति पुरुस्कार संयुक्त तौर पर प्रदान करके स्वीडन सरीखे समाजवादी राष्ट्र ने यह प्रबल पैगाम दिया है कि युद्ध करना है तो आपस में नहीं करो, वरन् एकजुट होकर अशिक्षा से करो, अज्ञान से करो, जहालत से करो, निर्धनता से करो और बाल मजदूरी जैसे विकट राष्ट्रीय अभिशाप से करो। कैलाश सत्याथी और मलाला यूसुफजई तो समस्त आंदोलन के केवल प्रतीक मात्र हैं। ये दोनो शख्सियतें और उनको प्रदान किया गया नोबल पीस प्राइज तो लाखों करोड़ों बच्चों को शिक्षा अथवा तालीम प्रदान कराने की मुहिम का केवल आरम्भ है।

मोबाइल : 09456483066

thearyasamaj.org

कार्य थे। आर्य समाज के मन्दिरों में प्रवेश के लिए जाति व धर्म की कोई बाधा नहीं थी। न केवल पौराणिक हिन्दुओं ने ही अपितु ईसाई व मुसलमानों सहित बौद्धों एवं जैनियों ने भी आर्य वैदिक धर्म को स्वीकार किया और अनेकों ने बढ़–चढ़ कर वेद प्रचार का कार्य किया। सदियों से चली आ रही अछूत व अस्पर्शयता की समस्या कमजोर पड़ कर समाप्त प्रायः हो गई। आर्य समाज ने कन्या विद्यालयों का भी शुभारम्भ कर समाज को नई दिशा दी। जो लोग स्त्री शिक्षा के विरोधी थे उन्होंने भी देखा–देखी कन्या पाठशालायें खोलकर आर्य समाज का अनुसरण किया और स्वयं की कन्याओं को भी आर्य कन्या पाठशालाओं में पढ़ाया। धार्मिक क्षेत्र में आर्य समाज ने मूर्तिपूजा का खण्डन किया। काशी में देश के 30 से अधिक शीर्षस्थ पण्डितों से मूर्तिपूजा पर अकेले शास्त्रार्थ किया और उन्हें पराजित किया। वेदों में मूर्तिपूजा का विधान सिद्ध न हो सका। बड़ी संख्या में लोगों ने स्वामी दयानन्द से प्रभावित होकर मूर्तिपूजा को छोड़कर आर्य धर्म को स्वीकार कर लिया। इसी प्रकार से मष्तक श्राद्ध, जन्मना जाति–पाति, बेमेल विवाह आदि अनेकानेक कुप्रथाओं का खण्डन कर उन्हें समाप्ती के कागार पर पहुंचाने के साथ विधवाओं के पुनर्विवाह तथा युवावस्था में ही कन्याओं का उनके गुण, कर्म व स्वभाव के अनुरूप युवकों से विवाह का समर्थन व प्रचार किया जिससे भारतीय हिन्दू समाज में नई चेतना व जोश उत्पन्न हुआ तथा विधर्मियों के मनसूबे धूलिसात हो गये।

स्वामी दयानन्द ने योग को भी उपासना में सर्वोपरि महत्व दिया और बताया कि ईश्वर की पूजा की सही विधि केवल योगाभ्यास द्वारा ईश्वर के गुणों का ध्यान व धन्यवाद करना ही है जिसके लिए प्रातः वह सायं काल में सिद्धासन या पद्मासन आदि किसी आसन में बैठ कर ध्यानावस्थित होकर ईश्वर उपासना करनी चाहिये। पौराणिकों द्वारा मन्दिरों में की जाने वाली षोडशोपचार वाली पूजा पद्धति को उन्होंने अनुचित, अशास्त्रीय, अनावश्यक एवं प्रयोजन रहित बताया। उनके जीवन काल सन् 1825–1883 में लोग अग्निहोत्र यज्ञ करना भूल चुके थे। स्वामी दयानन्द ने अग्निहोत्र यज्ञ का वैज्ञानिक व पर्यावरणीय महत्व समझाया और यज्ञ करने की वेद सम्मत विधि बनाकर देशवासियों को दी जिससे आरम्भ होकर आज देश भर में यज्ञ प्रचलित हो गये हैं। यज्ञ का उद्देश्य पर्यावरण की शुद्धि, रोग के किटाणुओं का नाश, स्वास्थ्य लाभ, रोगों का नाश तथा इच्छानुसार वर्षा होने के साथ मनुष्य की सभी उचित मनोकामनाओं की पूर्ति का होना भी है। उनके आने से पूर्व यज्ञों में हिंसा होती थी एवं गाय आदि पशुओं को भी मारा जाता था। इसके विरूद्ध वेदों की व्यवस्था देकर उन्होंने यज्ञों को हिंसा से मुक्त किया। **यदि महर्षि दयानन्द भगवान बुद्ध के पूर्व आये होते तो बौद्ध धर्म की स्थापना न हुई होती जिसका कारण मुख्यतः यज्ञों में हिंसा किया जाना ही था।** गुरूकुल की स्थापना से वेदाध्ययन को बढ़ावा मिला। उनके इस कार्य से देश में पहले भी और आज भी अनेक वेदों के विद्वान व वेद भाष्यकार हमारे पास हैं जिन पर हम गर्व कर सकते हैं। स्वामी दयानन्द एक ईश्वर, सभी मनुष्यों का एक धर्म, वेद ही एकमात्र पूर्ण धर्म पुस्तक और सबकी विचारधारा एक हो, इसका उद्घोष कर उन्होंने समाज व विश्व को एक नया विचार दिया जिसके क्रियान्वयन होने पर देश विदेश के आपसी अनेक झगड़े, अशान्ति व विवाद समाप्त हो सकते हैं। यह सभी बाते उनके वेद प्रचार का हिस्सा हैं। इन सभी कार्यों के लिए उन्होंने उपदेश, प्रवचन, व्याख्यान, वार्तालाप, शंका समाधान, शास्त्रार्थ, अनेक विषयों के ग्रन्थों का लेखन, वेदों का संस्कृत व हिन्दी भाषा में भाष्य व भावार्थ आदि कार्य किये। उनके प्रमुख व प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, ऋग्वेद संस्कृत–हिन्दी भाष्य आंशिक एवं यजुर्वेद संस्कृत–हिन्दी भाष्य सम्पूर्ण, संस्कार विधि, आर्याभिविनय, व्यवहार भानु, उपदेश मंजरी एवं उनका समस्त पत्रव्यवहार आदि। उन्होंने वैदिक धर्म व संस्कृति का प्रचार करने के लिए अपने एक सुयोग्य शिष्य पं. श्यामजीकृष्ण वर्मा को लन्दन भेजकर विश्व में वेद प्रचार द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार की नींव रखी। जर्मनी के प्रो. वाइज से पत्रव्यवहार कर उन्होंने भारतीय युवकों को शिल्पकला व प्रौद्योगिकी का प्रशिक्षण देने का प्रयत्न किया जिससे देश को औद्योगीकरण करके युवकों को व्यवसाय दिलाया जा सके और देश आगे चलकर आत्मनिर्भर हो सके। गोरक्षा का प्रश्न भी देश वासियों के स्वास्थ्य और देश की अर्थ व्यवस्था से जुड़ा है। इसके लिये उन्होंने गोकृष्यादि रक्षिणी सभा बनाने के साथ एक अपूर्व पुस्तक **"गोकरूणानिधि"** लिख कर गो का धार्मिक व आर्थिक महत्व सिद्ध किया। आज भी इस विषय पर अनुसंधान किये जाने की आवश्यकता है। स्वामी दयानन्द की एक बहुत बड़ी देन यह भी है कि उन्होंने सृष्टिकर्ता ईश्वर तथा जीवात्मा के सत्य स्वरूप से सारी दुनिया, विशेषकर भारत के लोगों को परिचित कराया जिसको उन दिनों कहीं कोई जानता ही नहीं था अथवा सभी इसे भूल चुके थे। यही स्वरूप यदि यूरोप के प्रमुख धर्म ग्रन्थ बाइबिल में विद्यमान होता तो हमारा अनुमान है कि पश्चिमी जगत के वैज्ञानिक नास्तिक न होते। धर्म ग्रन्थ में विद्यमान तर्कहीन स्वरूप के कारण ही हमारे वैज्ञानिकों ने ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार किया। यह ऐसा ही हुआ जैसे यज्ञों में हिंसा को देख कर भगवान बुद्ध ने वेदों को मानने से मना कर दिया था। जब उन्हें कहा गया कि वेद तो ईश्वर के दिये हुए हैं, तो उन्होंने वेदों को देने वाले ईश्वर को भी मानने से इनकार कर दिया था।

महर्षि दयानन्द देश भर में घूम–घूम कर वेद ज्ञान का प्रचार कर रहे थे। अज्ञानी व स्वार्थी लोगों को उनके

thearyasamaj.org

कार्य अपनी इच्छाओं व स्वार्थों की पूर्ति में बाधक प्रतीत हो थे। कोई उनका विरोधी उन्हें विष देता था तो कोई उन पर धूल व पत्थर फेंकता था। उन पर सांप फेंके गए और उनकी हत्या तक के प्रयास भी किये गये। लगभग 18 बार उन्हें विष देकर मार डालने का प्रयास किया गया। यौगिक क्रियाओं में अभ्यस्त होने से वह उन्हें दिए गए विष को निकाल देते थे। वेद प्रचार करते हुए उनका जोधपुर रियासत में जाने का कार्यक्रम बना जहां के लोगों में अज्ञान व अन्ध ाविश्वास के साथ–साथ वहां का राजा जसवन्तसिंह भी व्यभिचार आदि अनाचार से ग्रस्त था। स्वामीजी ने सभी समाजिक बुराईयों का पुरजोर खण्डन किया। परिणाम यह हुआ कि राजा की प्रिय वैश्या नन्ही भगतन क्रुद्ध हो गई। उसने स्वामीजी मिटाने के लिए गुपचुप योजना बनाई। अंग्रेज भी स्वामी दयानन्द को अन्दर ही अन्दर अपनी योजनाओं में बाधक समझते थे। यत्र–तत्र मुसलमान भी उनका विरोध ा करते थे। सैयद अहमद खां, डा. रहीम खां आदि कुछ समझदार मुसलमान उनके भक्त या सहयोगी भी रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में स्वामीजी को मारने का विरोधियों ने षडयन्त्र रचा। उन्हें जोधपुर प्रवास में विष दिया गया जो 30 अक्तूबर सन् 1883 को दीपावली के दिन उनकी मृत्यु का कारण बना। स्वामीजी की मृत्यु का दिन व समय स्वामीजी ने स्वयं चुना और एक शिक्षाप्रद उदाहरण प्रस्तुत कर अपनी जीवन लीला समाप्त की।

मुख्य प्रश्न यह है कि स्वामी जी ने दीपावली के दिन को अपनी जीवन संन्ध्या के लिए क्यों चुना? इस प्रश्न पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि दीपावली पर्व कार्तिक अमावस्या के घोरतम अन्धकार के दिन रात्रि में दीपकों को जलाकर प्रकाश करके मनाया जाता है। प्रकाश जीवन का और अन्धकार मष्त्यु का प्रतीक है। इसी प्रकार प्रकाश से ज्ञान का और अन्धकार अज्ञान का भी प्रतीक है। जहां ज्ञान है वहां प्रकाश है और जहां अज्ञान है वहां अन्धकार है। स्वामीजी को विष दिये जाने के कारण उनका स्वास्थ्य दिन प्रति गिर रहा था। वह अत्यन्त दुर्बल हो गये थे। शरीर तो उनको छोड़ना ही था, अन्यथा वह स्वयं छूट जाता। उन्होंने जीवन भर ईश्वर उपासना रूपी जिस योग विधि का अभ्यास किया था उससे योगी को यह बल प्राप्त हो जाता है कि वह शरीर के दुर्बल होने व जरावस्था होने पर ईश्वरोपासना करते हुए अपना शरीर छोड़ दे। स्वामी दयानन्द वेदों का प्रचार करते थे। वेद और दयानन्द एक दूसरे के पर्याय बन चुके थे। वेद अर्थात् ज्ञान, ज्ञान अर्थात् स्वामी दयानन्द तीनों पर्याय थे। स्वामी दयानन्द की मष्त्यु से एक प्रकार से वेद प्रचार का देशोन्नति व मनुष्योन्नति का कार्य अवरूद्ध होना था। अतः स्वामी दयानन्द की मष्त्यु ज्ञान रूपी प्रकाश के बुझने या लुप्त होने के समान एक घटना है। यह एक कारण भी महर्षि दयानन्द द्वारा अपनी मष्त्यु के लिए इस दिन को नियत करने के पीछे हो सकता है। अन्य विद्वानों की सम्मितियां कुछ भिन्न व अधिक सटीक हो सकती हैं। हमें अपनी ऊहा से जो कारण ज्ञात हुआ उसे हमने प्रकट किया है। मष्त्यु के दिन स्वामीजी ने अपने शिष्यों से दिन व वार पूछा था। शिष्यों ने बताया था कि उस दिन कार्तिक मास की अमावस्या और दीपावली का दिन था। स्वामीजी ने इस दिन को मष्त्यु वा मोक्ष के वरण के लिए उपयुक्त समझा। नाई को बुलाकर स्वामीजी ने अपना क्षौर कर्म कराया फिर जल से शरीर को स्वच्छ किया और शुद्ध व स्वच्छ वस्त्र धारण किये। अपने प्रिय शिष्यों से बातें की और उनका ढ़ांढ़स बढाया। उन्हें शिक्षा दी और उपहार दिये। सायं लगभग 6 बजे जब सूर्यास्त हो रहा था, अजमेर में भिनाए की कोठी नामक अपने निवास पर उपस्थित सभी लोगों को अपने पीछे आने के लिए कहा। फिर ईश्वर की प्रार्थाना विषयक वेद मन्त्रों का पाठ किया और हिन्दी भाषा में भी ईश्वर से प्रार्थना की। इसके बाद अन्तिम वाक्य बोले कि हे ईश्वर ! तुने अच्छी लीला की, अहा, तुने अच्छी लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हो। यह कह कर लम्बी श्वांस ली और इसी के साथ अपनी आत्मा को शरीर से बाहर निकाल दिया। हमने स्वामी दयानन्द जी को **"मुमुक्षु महर्षि दयानन्द"** लिखा है। शास्त्रों के अनुसार योगाभ्यास द्वारा समाधि अवस्था की प्राप्ति और ईश्वर का साक्षात्कार हो जाने पर उपासक मोक्ष का अधिकारी बन जाता है। स्वामी दयानन्द जी एक सिद्ध योगी थे और उन्होंने अनेकानेक बार ईश्वर का साक्षात्कार किया था जो उनके साहित्य के अध्येता भली प्रकार जानते हैं। अतः वह बहुत पहले ही मोक्ष के द्वार पर पहुंच चुके थे। **उनके जीवन में पूर्व घटित घटना के अनुसार उन्हें यह अनुभव हो चुका था कि जीवन में उन्होंने जो पाना था वह पा चुके हैं तथापि वह आर्ष ज्ञान के लिए प्रयत्नशील थे और वह भी उन्हें अपने गुरू दण्डी विरजानन्द स्वामी जी से प्राप्त हो गया था।** यह भी एक संयोग था कि मोक्ष रूपी अपनी मष्त्यु से पूर्व वह अपनी वसीयत लिख चुके थे जिसके अनुसार एक परोपकारिणी सभा का गठन किया गया था जो उनके सर्वस्व की अधिकारिणी संस्था थी। स्वामीजी ने सभा से जो अपेक्षायें की थी वह अभी पूरी नहीं हुई हैं। उन्होंने सभा को जो दायित्व सौंपा है वह ईश्वर का कार्य है। वह कब व कैसे तथा किससे व किनसे उसे पूरा कराता है, उसे जानना सम्भव नहीं है। दीपावली का पर्व महर्षि दयानन्द के निर्वाण व मोक्ष पर्व भी है। इस अवसर पर हम महर्षि को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं और देश वासियों को दीपावली की शुभकामनायें भेंट करते हैं।

—मनमोहन कुमार आर्य

thearyasamaj.org

'सांसारिक जीवन के सुख व मोक्ष का प्रमुख आधार हमारा स्वास्थ्य'

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

स्वास्थ्य मानव शरीर की वह अवस्था है जिसमें वह निरोग, बलवान व कार्य करने में औसत से अधिक कार्य करने की क्षमता से युक्त हो। शरीर के अन्नमय होने से इसका आधार भोजन है। शरीर में रहने वाली जीवात्मा एक चेतन तत्व है जो ईश्वरीय ज्ञान वेद के अनुसार ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप, इनके गुण, कर्म व स्वभाव को जानकर जीवात्मा के द्वारा ईश्वर की उपासना एवं ध्यान से स्वस्थ व बलवान बनती है।

स्वास्थ्य सुख का आधार होता है। हमारे जीवन की सभी क्रियायें भी सुख की प्राप्ति के लिए ही की जाती हैं। स्वास्थ्य अच्छा, निरोग व बलवान हो, इसके लिए स्वस्थ मन व स्वस्थ मन के लिए स्वस्थ शरीर एवं इसमे एक ज्ञान से युक्त आत्मा की आवश्यकता होती है। ज्ञानी आत्मा की आवश्यकता इस लिए होती है कि वह मन को नियंत्रण में रखकर उसे सत्परामर्श दे सके। जीवात्मा व ईश्वर का साक्षात्कार करने वाले एक योगी वा वेद मनीशि ने एक महत्वपूर्ण श्लोक दिया है जिसमें वह कहते हैं कि जल से शरीर शुद्ध व स्वस्थ होता है, मन सत्य से शुद्ध होता है, विद्या व तप से मनुश्य की आत्मा और बुद्धि ज्ञान से शुद्ध या पवित्र होती है। मन सत्य से शुद्ध होता है। इसका अर्थ है कि हमें जीवन को सुखमय बनाने व जीवन के लक्ष्य एवं साध्य की प्राप्ति के लिए मन को सत्य से युक्त करना होगा। मन को सत्य से कैसे युक्त किया जाता है, यह भी जान लेते हैं। सत्य किसी पदार्थ के सत्य व वास्तविक गुणों तथा उसके स्वभाव, चरित्र व व्यवहार के ज्ञान को कह सकते हैं। किसी पदार्थ में जो गुण हैं व उसका जो स्वरूप है, उसके विपरीत यदि हमारी मान्यता या ज्ञान है तो वह असत्य कहलाता है। वेद, ईश्वर, आत्मा व योग का ज्ञान तथा अनुभव रखने वाले प्रसिद्ध विद्वान महर्शि दयानन्द सरस्वती का कहना है कि जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही जानना व मानना तथा जैसा वह नहीं है, उसको भी जानना कि वह वैसा नहीं है, सत्य कहलाता है। सत्य को जानने में ही मन की सार्थकता होती है। मन सत्य से युक्त होकर तथा बुद्धि के संकल्प—विकल्प व इसके सत्यासत्य के विवेचन से तीनों अर्थात् मन, बुद्धि व आत्मा सत्य से संयुक्त होकर जीवन को सत्य मार्ग पर चलाते हैं जिससे जीवन का कल्याण, उन्नति व अनेक लाभों में से स्वास्थ्य भी अनुकूल, दृढ़ व बलवान होता है और मनुश्य सच्चा सुख प्राप्त करता है। ऐसा मनुश्य जो भी भोजन करेगा वह ऐसा होगा जो शरीर को लाभ पहुंचायें और जिससे स्वास्थ्य अच्छा रहे। हमें यह भी जानना है कि स्वास्थ्य का आधार मुख्यतः भोजन है। शास्त्र कहते हैं कि आहार, निद्रा, भय व ब्रह्मचर्य, यह चार स्वास्थ्य के आधार हैं। यद्यपि आहार में हमारे सभी ज्ञानी बन्धु मुख्यतः भोजन को ही सम्मिलित करते हैं परन्तु शुद्ध वायु में श्वांस लेना व हमारे भोजन के घटकों का उत्पादन कृत्रिम रसायनिक खाद के प्रयोग से न होकर प्राकृतिक खाद के प्रयोग से होना चाहिये जिससे भोजन के पदार्थ हमारे स्वास्थ्य के लिए शक्तिप्रद व सुखदायी हों। भोजन के साथ—साथ हम जानते हैं कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए समय पर सोना और समय पर जागना भी आवश्यक है। सोने का आदर्श समय रात्रि 10:00 बजे व उठने का प्रातः 4:00 बजे है। प्रातः 4:00 बजे उठकर क्या करें, इसके लिए पहला कार्य तो सृश्टिकर्ता ईश्वर का चिन्तन करना व उसके पश्चात शुद्ध वायु का सेवन करना और इसके लिए 1 से 2 घंटे तक भ्रमण करना है। भ्रमण के बाद व्यायाम करने से स्वास्थ्य को विशेश लाभ होता है। छोटे बच्चे को हम रोते हुए देखते हैं। वह अपने हाथ व पैरों को झटकता व पटकता रहता है। यह सब क्या हैं? यह उसका अपना व्यायाम है जो उसे ईश्वर या प्रकृति ने सीखा कर भेजा है। हममें पलक झपकने या श्वांस लेने की प्रक्रिया स्वचालित रूप से कार्य करती है। प्राणायाम से श्वसन प्रणाली को शक्ति व बल मिलता है। इन दोनों से हमारी आंखे व श्वसन प्रणाली समस्त आयु पर्यन्त स्वस्थ रहती है। यद्यपि यह पलक झपकने की क्रिया व श्वसन प्रणाली स्वचालित है परन्तु किसी भी क्रिया का एक या अधिक कारण हुआ करते हैं। यहां हम अपनी आत्मा को इसका कारण मान लेते हैं। सभी शरीरों में यह क्रिया सामान्य रूप से चल रही है। अज्ञानी से अज्ञानी आत्मा में भी ऐसा ही होता है इससे लगता है कि आत्मा इसे न चलाकर, आत्मा से इतर सत्ता जिसे आध्यात्मिक लोग ईश्वर कहते हैं, उससे संचालित है, यह स्वीकार करना पड़ता है। यह एक सिद्धान्त है कि जिस कार्य का कारण कोई भी मनुश्य सिद्ध न हो, उसे ईश्वर से संचालित मान लेना चाहिये। इससे हमें अनेक प्रकार से लाभ ही होता है, हानि कुछ नहीं होती। कुछ बन्धु ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते हैं। इस विषय में यह तथ्य है कि यदि ईश्वर न हो तो भी ईश्वर को मान लेने पर उसको मानने वालों की कुछ हानि नहीं होती परन्तु यदि ईश्वर है और वह

thearyasamaj.org

उसे नहीं मानते तो उनकी हानि ही हानि है, क्योंकि वह उसे जानने व उससे प्राप्त होने वाले लाभों से वंचित रह जाते हैं और अपने असत्य व्यवहार के कारण दण्ड भी पाते हैं। हमने स्वास्थ्य के आधार के रूप में भोजन या आहार की बात की व उसके बाद निद्रा की बाद की। स्वास्थ्य का एक आधार भय भी कहा जाता है। भयभीत व्यक्ति का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। वह भयातुर रहता है जिससे वह अस्वस्थ रहता है। भयभीत रहना भी स्वास्थ्य के लिए अहितकर है। अस्वस्थ व्यक्ति के उपचार में इस तथ्य का भी ध्यान रखना होता है कि कहीं वह किसी से भयातुर तो नहीं है। उसके भय के कारण को दूर करने से वह स्वस्थ हो जाता है। आध्यात्मिक ज्ञान से सबसे बड़ा लाभ भय का निवारण होता है। अध्यात्म के अध्ययन से हमें पता चलता है कि प्रत्येक प्राणी की मृत्यु अवश्य होनी है जो उसके पूर्व–जन्म के प्रारब्ध या भाग्य तथा वर्तमान जीवन के आनेक कारकों पर आधारित है। वर्तमान जन्म में पुरूशार्थ से आयु को बढ़ाया जा सकता है। इस जन्म में सभी प्राणियों की मृत्यु होना निश्चित है और मृत्यु के बाद पुनर्जन्म भी सुनिश्चित है जो कि हमारे प्रारब्ध, भाग्य व कर्मों के आधार पर होगा। इस पुनर्जन्म के सिद्धान्त, इसकी वास्तविकता व ज्ञान से अच्छे कर्मों या कार्यों को करने की प्रेरणा मिलती है और मृत्यु का भय दूर हो जाता है। इसके पश्चात ब्रह्मचर्य या संयम का स्थान है। ब्रह्मचर्य एक प्रकार से संयम ही है। संसार में असंख्य अच्छे व बुरे विशय हैं। यदि हम अनुचित विशयों का ध्यान, चिन्तन व मनन करते हैं तो इससे स्वास्थ्य के लाभ के स्थान पर हानि होती है। हमें अपने मन को नियंत्रित करके उसे सत्य व ज्ञान की प्राप्ति में लगाना चाहिये और ईश्वर, आत्मा व प्रकृति के सत्य ज्ञान को प्राप्त करना चाहिये। ऐसा हो जाने पर हम विज्ञान व उससे जुड़े अनेकानेक विशयों का अध्ययन कर सकते हैं। विज्ञान, चिकित्सा, वाणिज्य, अर्थशास्त्र व इंजीनियरिंग आदि अनेक विशय हैं जिनकी हमें, हमारे समाज व देश को आवश्यकता है। इसको व्यापक रूप से जानना व उसका व्यक्तिगत, सामाजिक व देश के लिए उपयोग करने के लिए ब्रह्मचर्ययुक्त जीवन सहायक होता है। जीवन को ब्रह्मचर्य पूर्वक व्यतीत करने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है और यह भी स्वास्थ्य का प्रमुख आधार है। स्वास्थ्य के दो और भी आधार है जिनमें से एक आसन व दूसरा प्राणायाम है। योग दर्शन में योग के आठ अंगों में से दो अंग हैं, आसन और प्राणायाम। आसन का समावेश व्यायाम में हो जाता है। इसका उल्लेख हम कर चुकें हैं। हमें प्राणायाम को भी जानना है। प्राणायाम भी प्राणों का व्यायाम ही है। प्राणों को दष्ण व अधिक उपयोगी बनाने के लिए प्राणायाम किया जाता है। प्राणायाम लम्बा श्वांस लेकर अधिक शुद्ध वायु व आक्सीजन को अधिक से अधिक मात्रा में अपने फेफड़ों में पहुंचाना और अधिक से अधिक फेफड़ों की दूशित वायु कार्बन डाई आक्साइड गैस को लम्बे बाहरी श्वांस द्वारा बाहर निकालना होता है। इससे हष्दय के रक्त की शुद्धि सामान्य गति से श्वांस लेने से अधिक मात्रा में होती है और अनेक रोगों से मुक्ति मिलती है। जब हम प्राणायाम कर रहे होते हैं तो इससे हमारे शरीर के छोटे–बड़े सभी अंग व प्रत्यंग प्रभावित होते हैं जिससे उनका व्यायाम होने में उनकी शक्ति व कार्यक्षमता बढ़ती है व वह पुश्ट होते हैं। आरोग्य की प्राप्ति के साथ सभी अंग अधिक समय के लिए कार्य योग्य हो जाते हैं जिससे हमारी आयु में भी वष्द्धि होती है। अतः सभी को अपनी आयु व शारीरिक स्थिति के अनुसार योग के आसन व प्राणायाम को करना चाहिये।

यहां हम स्वास्थ्य के तीन आधारों ऋतभुक, हितभुक व मितभुक की भी चर्चा करना चाहते हैं। ऋतभुक ऋतु के अनुसार भोजन के पदार्थों के सेवन को कहते हैं। मुख्यतः हमारे देश में शीत, ग्रीश्म तथा वर्शा ऋतुयें होती हैं। इन ऋतुओं के अनुसार व अनुकूल ही हमें भोजन करना चाहिये। अपने शरीर की प्रकृति व स्थिति के अनुसार भोजन हितभुक कहा जाता है तथा भूख से कुछ कम भोजन करना मितभुक कहा जाता है। भोजन निश्चित समय पर हो तो लाभदायक होता है। असमय के भोजन का स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। स्वास्थ्य के प्रति सजग व्यक्तियों को इन सभी नियमों को भी ध्यान में रखना चाहिये। लेख के आरम्भ में हमने मन को सत्य से युक्त या सत्याचरण में प्रवृत्त करने की बात कही है। मनुश्य का मन ही सुख व दुख का कारण हुआ करता है। शास्त्र में इसे इस रूप में कहा गया है कि मनुश्य का मन ही बन्धन अर्थात् दुख का कारण तथा बन्धनों से मुक्ति, सुख अर्थात् मोक्ष का कारण हुआ करती है। सुखों की प्राप्ति एवं भोग अच्छे स्वास्थ्य से ही सम्भव है। ईश्वर के सत्य स्वरूप का ध्यान व चिन्तन करते हुए उसकी प्रार्थना व उपासना करना भी शरीर को स्वस्थ व दीघार्यु बनाने में उपयोगी रहता है। अतः स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए शुद्ध, पवित्र व स्वास्थ्यवर्धक भोजन करना चाहिये और संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए अपने शरीर को स्वस्थ बनाकर सुखी रहना चाहिये। लेख को विराम देने से पूर्व हम यह कहना चाहते हैं कि हमें अपना यह शरीर ईश्वर व माता–पिता से मिलता है, यह हमारे अपने अधिकार में नहीं है, परन्तु स्वास्थ्य के नियमों का पालन कर अपने शरीर को स्वस्थ व बलिश्ठ बनाना हमारे अपने हाथों में हैं। यदि हम ऐसा नहीं करेगें तो रोगी हो सकते हैं जिसका परिणाम दुख व मृत्यु के रूप में सामने आता है और हमारा जीवन क्लेशों से भर जाता है। क्लेश की स्थिति का निवारण रोग को आने ही न देना है व इसके लिए हमें स्वास्थ्य के नियमों का पालन करना है।

thearyasamaj.org

HYDERABAD
DASSARA JULOOS
DHWAJADHARI
SHRI DHARMAVEER JI
AND ACHARYA ANAND PRAKASH JI
ACHARYA UDAYAN JI,
ACHARYAA SUNITA JI

NALAGONDA
ARYA SAMAJ
DASSARA JULOOS
DHWAJADHARI
SRI JAGAN MOHAN JI

thearyasamaj.org

మంగళవారం | 7 అక్టోబర్ | 2014 | పేజీలు 20

నమస్తే తెలంగాణ

హైదరాబాద్

వైభవంగా ఆర్య సమాజ్ దసరా ఊరేగింపు

అలరించిన విద్యార్థినుల దాండియా ఆటలు

సిటీబ్యూరో, టీ మీడియా : ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆధ్వర్యంలో జరిగిన చారిత్రక దసరా ఊరేగింపు అత్యంత వైభవోపేతంగా సాగింది. తెలంగాణ, ఆంధ్రప్రదేశ్ శాఖల ఆధ్వర్యంలో వేడుకలు కన్నుల పండువగా జరిగాయి. కిషన్‌గంజ్ ఆర్య సమాజం నుంచి బయలుదేరిన ఊరేగింపు అఫ్జల్‌గంజ్, గౌలిగూడ, పుత్లీబౌలీ, కోఠి మీదుగా సుల్తాన్‌బజార్ వరకు కొనసాగింది. విద్యార్థుల దేశభక్తి గీతాలు, యువకుల కర్రసాము విన్యాసాలు ఆకట్టుకోగా, విద్యార్థినుల దాండియా నృత్యాలు అలరించాయి. సుల్తాన్ బజార్ వద్ద జరిగిన ముగింపు సభలో పాల్గొన్న ఆర్య ప్రతినిధి సభ అధ్యక్షుడు విఠల్ రావు మాట్లాడుతూ భారత ప్రధాని నరేంద్రమోదీ స్వచ్ఛ భారత్ నినాదాన్ని ఉటంకిస్తూ పరిసరాల స్వచ్ఛతతో పాటు ప్రజలు, నాయకులు తమ శీలాన్ని పవిత్రంగా ఉంచుకోవాలన్నారు. వేడుకల్లో ప్రధాన సంయోజకులు రామచంద్ర కుమార్, అలియాబాద్ ఆర్య గురుకుల ఆచార్యులు ఆనందప్రకాశ్, గురుకుల ఆచార్యులు ఉదయనాచార్య తదితరులు పాల్గొన్నారు.

आर्य समाज की विजयादशमी शोभायात्रा सम्पन्न

हैदराबाद, 6 अक्तूबर-(मिलाप ब्यूरो) [illegible]

thearyasamaj.org

RNI.No.52990/93 31-10-2014 आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, D.No. 4-2-15
మహర్షి దయానంద మార్గము సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95,
phone No. 040 - 24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య ప్రధాన్ సభ

रिहाई | भूखे पेट मजदूरी कर रहे थे छतरपुर, सागर और टीकमगढ़ के बाशिंदे

नोएडा से छुड़ाए गए मप्र के 10 बंधुआ मजदूर

नईदुनिया ब्यूरो, नई दिल्ली। बंधुआ मुक्ति मोर्चा ने नोएडा के सेक्टर-134 में बन रही एक बहुमंजिला इमारत में काम करने वाले 10 मजदूरों को कृष्णा बिल्डर्स स्टेट प्राइवेट लिमिटेड और अग्नि कंस्ट्रक्शन लिमिटेड कंपनियों से छुड़ाया। इनमें से दो बाल बंधुआ मजदूर हैं। ये सभी मध्यप्रदेश के टीकमगढ़, छतरपुर और सागर जिलों के हैं। सभी मजदूरों को गौतमबुद्ध नगर प्रशासन की ओर से रिहाई प्रमाण पत्र दे दिया गया है। सभी मध्यप्रदेश के लिए रवाना हो गए हैं।

ठेकेदार खेवर मियां सभी 10 मजदूरों को 500 रुपए की पेशगी देकर लाया था। इन्हें मजदूरी के नाम पर कभी-कभार सौ या दो सौ रुपए दिए जाते थे। बाद में वह भी मिलना बंद हो गए। कुछ दिन बाद रात में खेवर मियां इन मजदूरों को भाग्य भरोसे छोड़ कर फरार हो गया। गुलाब अहिरवार ने किसी तरह बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कार्यवाहक निदेशक निर्मल गोराना को फोन कर अपनी आपबीती सुनाई। इसके बाद मोर्चा सदस्यों ने इन मजदूरों को छुड़ाया। निर्माणाधीन बहुमंजिला इमारत के आसपास बनी इन मजदूरों की झुग्गियों में खाने का भी कोई सामान नहीं मिला। मजदूरों को छुड़ाए जाने के बाद अधिकारियों ने कंपनी से प्रति मजदूर 3 हजार रुपए दर से भुगतान को कहा तो मजदूरों ने खुद कहा कि पहले यहां से छुड़ा दीजिए, पैसा हम थाने में ही लेंगे।

छुड़ाए गए बंधुआ मजदूर।

जानवरों जैसा सलूक

मजदूरों ने बताया कि महीनों की बकाया मजदूरी लेने कंपनी के पास पहुंचे तो उनसे कहा गया कि जिसने काम कराया, वही पैसा देगा। मजदूरों का कहना था कि उनके साथ जानवरों जैसा सुलूक किया गया। ठेकेदार के चले जाने के बाद भी कंपनियां काम कराती रहीं और पैसे देने में लगातार आनाकानी करती रहीं। 14 वर्षीय बाल बंधुआ मजदूर धर्मेंद्र का कहना था कि हमें अपने गांव में 50 से 60 रुपए दिहाड़ी मिल जाती थी, यहां कुछ भी नसीब नहीं हुआ। मप्र के सागर की अनीता बताती है कि इन लोगों ने हमें खाने को दिया न सोने को। आखिर कब तक भीख मांगकर पेट भरते।

నిజాం రాజ్యంలో జరిగిన అత్యాచారాలకు వ్యతిరేకంగా జరిగిన పోరాటంలో ఆర్యసమాజము యొక్క చారిత్రికపాత్రపై ఆర్య ప్రతినిధి సభ వారు ప్రచురించిన, డా॥ ఆనంద్ రాజ్ వర్మ గారి ద్వారా హిందీలో వ్రాసిన

హైదరాబాదు కా ముక్తి సంఘర్ష

పుస్తకము मूल्य : रू. 120/- Now at Rs. 80/- each, only on 5 copies

हैदराबाद का मुक्ति संघर्ष

निज़ाम राज्य के अत्याचारों के विरुद्ध आर्य समाज द्वारा किए गए संघर्ष के इतिहास पर डॉ. आनन्द राज वर्मा द्वारा लिखित व सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तक

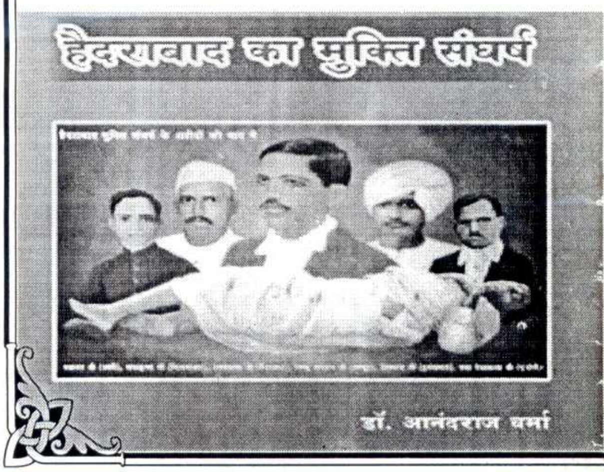

Now available in Hindi on concessional rate for only Rs. 80/- each only on 5 copies. 280 pages book written by Dr. Anand Raj Varma and published by Arya Pratinidhi Sabha AP-Telangana. rate : Rs. 120/-

प्रकाशक :
आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. हैदराबाद तेलंगाना
महर्षि दयानंद मार्ग, सुल्तान बज़ार, हैदराबाद
फोन : 040 - 24753827, 24756983, 66758707, 09849560691
e-mail : acharyavithal@gmail.com

Editor: VithalRao Arya • acharyavithal@gmail.com
సంపాదకులు : విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాద్.95. Ph.: 24558707, Email : aryavithal@yahoo.co.in.
संपादक: श्री विट्ठल राव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।
प्रकाशक: आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना सुल्तान बाजार, हैदराबाद तेलंगाना-९५